DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

रीतिकाल

Part -3

LIVE 21-06-2024 09:00 AM

सूरति मिश्र

सूरति मिश्र हिन्दी के रीतिकाल के कवि थे। इनका जन्म आगरा में हुआ था। ये बल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित हुए थे।

रचनाएँ

- अलंकार माला
- रस सरस
- नखशिख
- रस रत्नाकर
- श्रृंगार सागर
- रसरत्न माला
- रस ग्राहक चन्द्रिका
- काव्य - सिद्धान्त
- भक्ति विनोद

- सूरति मिश्र की पहली रचना 'श्रीनाथ बिलास' है, जिसमें इन्होंने कृष्ण लीलाओं का वर्णन किया है।
- सूरति मिश्र कृत 'भक्ति विनोद' में भक्तों की दिनचर्या का वर्णन हैं।
- 'भक्तमाल' में इन्होंने बल्लभाचार्य के शिष्यों का प्रशस्तिमान किया है।
- मिश्र जी ने केशव की 'रसिकप्रिया' और 'कविप्रिया' की टीकाएँ लिखीं। रसिकप्रिया की इस टीका का नाम 'रसगाह चन्द्रिका' है।

भिखारीदास

कवि और आचार्य भिखारीदास का जन्म प्रतापगढ़ के निकट टेंउगा नामक स्थान में हुआ था।

'काव्यनिर्णय' में भिखारीदास जी ने प्रतापगढ़ के सोमवंशी राजा पृथ्वीसिंह के भाई बाबू हिन्दूपति सिंह को अपना आश्रय दाता लिखा है।

काव्यांगों के निरूपण में भिखारीदास को सर्वप्रधान स्थान दिया जाता है क्योंकि इन्होंने छन्द, रस, अलंकार, रीति, गुण, दोष शब्द-शक्ति आदि सब विषयों का विस्तृत प्रतिपादन किया है।

भिखारीदास की रचना में शब्दाडम्बर नही हैं। न ये शब्द चमत्कार पर टूटे हैं, न दूर की सूझ के लिए व्याकुल हुए हैं। इनकी रचना कलापक्ष में संयत और भाव पक्ष में रंजन कारिणी है।

कृतियाँ / रचनाएँ

- नामप्रकाश कोश (संवत 1795)
- रस सारांश (1725-60 ई.)
- छन्दार्णव पिंगल काव्य निर्णय
- श्रृंगार निर्णय
- शब्दनाम कोश
- विष्णुपुराण भाषा
- शतरंज शतिका
- छन्द प्रकाश

- भिखारी दास कृत 'रस सारांश' रस विवेचन सम्बन्धी ग्रंथ है। इसमें रस के अंगों और नायक-नायिका भेद का निरूपण किया गया है।
- भिखारी दास का 'काव्य निर्णय' सर्वांग निरूपक काव्य है। इसमें काव्य प्रयोजन, काव्य कारण, अलंकार, रस, भाव ध्वनि, व्यंग्य, तुक, गुण और दोष आदि का विवेचन है।
- भिखारीदास की 'छन्दोर्णव पिंगल के 15 तरंगों में मात्रिक और वार्णिक छन्दों का परिचय दिया गया है

रीति सिद्ध कवि

रीति सिद्ध कवियों का विवरण निम्न हैं-

सेनापति

सेनापति भक्तिकाल एवं रीतिकाल के सन्धियुग के कवि हैं। इनकी रचनाओं में हिन्दी साहित्य की दोनों धाराओं का प्रभाव पड़ा है।

सेनापति अनूप शहर के रहने वाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। अन्य प्राचीन कवियों की भाँति सेनापति का जीवनवृत संदिग्ध है। इनकी भाषा शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा है। सेनापति राम के विशेष भक्त थे। चमत्कार प्रियता नायिका भेद उनके काव्य में मिलते हैं।

कृतियाँ / रचनाएँ

- कवित्त रत्नाकर (1649 ई.)
- काव्य कल्पद्रुम

सेनापति के 'कवित्त रत्नाकर' में वर्णित नायिकाभेद, विरह के प्रसंग में षट्ऋतु वर्णन तथा चमत्कार चारूत्व हिन्दी साहित्य में अनुपम हैं।

सेनापति जैसा ऋतु वर्णन रीतिकाल के किसी कवि ने नहीं किया है।

सेनापति ने श्लेष तथा यमक का सजग प्रयोग किया है।

बिहारी

बिहारी का जन्म ग्वालियर में हुआ। बिहारी जयपुर नरेश सवाई राजा जयसिंह के दरबार में रहकर काव्य रचना करते थे।

बिहारी की कविता का मुख्य विषय श्रृंगार है। उन्होंने शृंगार के संयोग और वियोग दोनों ही पक्षों का वर्णन किया है। बिहारी की भाषा साहित्यिक ब्रज भाषा है। इसमें पूर्वी हिन्दी, बुंदेलखण्डी, उर्दू, फारसी आदि के शब्द भी आए हैं।

विषय के अनुसार, बिहारी की शैली तीन प्रकार की है-

(i) माधुर्य पूर्ण व्यंजना प्रधान शैली

(ii) प्रसादगुण से युक्त सरस शैली

(iii) चमत्कार पूर्ण शैली

बिहारी के काव्य में दोहा और सोरठा छन्द की प्रधानता है। अतिशयोक्ति, अन्योक्ति और सांगरूपक बिहारी के विशेष प्रिय अलंकार हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने बिहारी को रसवादी माना है जबकि डॉ. नगेन्द्र ने ध्वनिवादी स्वीकार किया है।

- श्री राधा चरण गोस्वामी ने बिहारी को 'पीयूषवर्षी मेघ' की उपमा दी है।

'बिहारी सतसई' श्रृंगार रस का अमर ग्रंथ है। भाव, भाषा, अलंकार और नायिका भेद की दृष्टि से यह एक अत्यन्त प्रौढ़ कृति है।

लल्लू लाल ने 'बिहारी सतसई' पर 'लाल चन्द्रिका' नाम से टीका लिखी।

'बिहारी सतसई' पर सबसे प्रामाणिक टीका बाबू जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' की मानी जाती है।

बिहारी सतसई के अन्य टीकाकार

टीकाकार	टीका	विशेषति
कृष्णलाल कवि	कृष्णलाल की टीका	प्रत्येक दोहे का सवैया में विवेचन
सुरति मिश्र	अमर चन्द्रिका लालचन्द्रिका	टीका का प्रणयन दोहों में हुआ है।
	बिहारी बिहार	आधुनिक खड़ी बोली में
प्रमदाय पाण्डेय अम्बिका दत्त व्यास		दोहे के भावों का रोला छन्द में पल्लवन
पद्मसिंह शर्मा	संजीवनी भाष्य	तुलनात्मक पद्धति में अर्थ निरूपण
आनन्दी लाल शर्मा	फिरंगे सतसई	अर्थ निरूपण फारसी भाषा में

- कृष्णलाल कवि ने बिहारी सतसई की टीका सर्वप्रथम सवैया छन्द में ब्रजभाषा में लिखी।
- रेवरेण्ड एडविन ग्रीब्ज ने बिहारी को शब्दों का चतुर प्रयोक्ता' मात्र माना हैं।
- संस्कृत के आचार्य बलदेव उपाध्याय ने लिखा है "हाल गाथा' के गोवर्धन 'आर्या' के तथा बिहारी 'दोहा' के बादशाह हैं।"

रीतिमुक्त कवि

रीतिमुक्त कवियों का विवरण इस प्रकार है-

घनानंद

घनानंद रीतिमुक्त काव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। ये 'आनन्दघन' नाम से भी प्रसिद्ध हैं। अधिकांश विद्वान घनानन्द का जन्म दिल्ली और उसके आस-पास का होना मानते हैं। कहा जाता है कि ये शहंशाह मुहम्मद शाह रंगीले के दरबार में मीरमुंशी थे और 'सुजान' नामक नर्तकी पर आसक्त थे।

घनानन्द निम्बार्क सम्प्रदायाचार्य श्री वृन्दावनदेव से दीक्षा ग्रहण की। इनका सखी भावसूचक नाम 'बहुगुनी' था। घनानन्द मूलतः प्रेम की पीड़ा के कवि हैं। वियोग वर्णन में इनका मन अधिक रमा है। घनानन्द के सन्दर्भ में आचार्य शुक्ल की निम्न पंक्तियाँ महत्त्वपूर्ण हैं

(i) प्रेम की अनिर्वचनीयता का आभास घनानन्द ने विरोधाभासों के द्वारा दिया हैं।

(ii) इनकी सी विशुद्ध, सरस और शक्तिशालिनी ब्रजभाषा लिखने में और कोई समर्थ नहीं हुआ। विशुद्धता के साथ प्रौढ़ता और माधुर्य भी अपूर्व है।

(iii) प्रेम की पीर ही को लेकर इनकी वाणी का प्रादुर्भाव हुआ। प्रेममार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक तथा जबादानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ।

रामधारी सिंह दिनकर

"रीतिकाल की बौद्धिक विरहानुभूति, निष्प्राणता और कुण्ठा के वातावरण में घनानन्द की पीड़ा की टीस सहसा ही हृदय को चीर देती है और मनसहज ही मान लेता है कि दूसरो के लिए किराए पर आँसू बहाने वालों के बीच यह कवि है, जो सचमुच अपनी पीड़ा में ही रो रहा है।"

रचनाएँ

- सुजानहित
- वियोगबेलि
- यमुनायश
- प्रेमपत्रिका
- ब्रजविलास
- अनुभव चन्द्रिका
- प्रेमपद्धति
- गोकुलगीत
- कृपाकन्द

- इश्कलता
- प्रीतिपावस
- प्रेमसरोवर
- रसवसन्त
- रंगबधाई
- वृषभानुपुर सुषमा
- गिरिपूजन
- विचारसार
- भावनाप्रकाश

- घामचमत्कार
- वृंदावन मुद्रा गोकुलचरित्र
- रसनायश
- मुरलिकामोद
- नाममाधुरी
- ब्रजव्यवहार
- दानघटा

- कृष्णकौमुदी
- प्रिया प्रसाद
- ब्रजस्वरूप
- प्रेमपहेली
- गोकुल विनोद
- मनोरथमंजरी

- घनानन्द को 'रस का साक्षात् अवतार' कहा गया है। घनानन्द कृत 'सुजानहित' में 'सुजान' के प्रति पाँच सौ से ज्यादा कवित्त - सवैये पाएँ जाते हैं।
- घनानन्द सवैयों की रचना कभी-कभी समस्या पूर्ति के ढंग पर भी करते थे। 'सुजानहित' में कई सवैयों के अन्त में 'ब्रजछैल की गैल सदाई रहौं' की मूर्ति मिलती हैं।
- स्वानुभूतिपरक अभिव्यक्ति के कारण घनानन्द के काव्य में जो मार्मिकता और हृदय को स्पर्श करने की क्षमता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

आलम

आलम औरंगजेब के दूसरे बेटे मुअज्जम के आश्रय में रहते थे, जो पीछे बहादुरशाह के नाम से गद्दी पर बैठा ।

रचनाएँ

- माधवानल काम-कन्दला
- श्याम - सनेही
- आलम - केलि
- सुदामा चरित

आलम कृत ‘माधवानल काम कन्दला' शृंगार रस प्रधान है, इसकी भाषा अवधि है।

'सुदामा चरित' में श्री कृष्ण के मित्र सुदामा की कथा वर्णित है। आलम कृत 'श्याम सनेही' एक खंडकाव्य है, जिसमें दोहा - चौपाई छन्द में रूक्मणी विवाह की कथा वर्णित है।

'आलमकेलि' में आलम और शेख दोनों के कई छन्द गंगा, पार्वती, शिव और राम को समर्पित हैं।

'आलम केलि' मुक्तक काव्य है, जिसमें नवोढ़ा, प्रौढ़ा, मानिनी, खण्डिता आदि विभिन्न प्रकार की नायिकाओं की विभिन्न स्थितियों के मनोरम चित्रण के अतिरिक्त कृष्ण और गोपियों के प्रेम का भी वर्णन है

- आलम के विषय में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है

- ये प्रेमोन्मत्त कवि थे और अपनी तरंग के अनुसार, रचना करते थे । इसी से इनकी रचनाओं में हृदय तत्व की प्रधानता है। 'प्रेम की पीर' या 'इश्क का दर्द' इनके एक-एक वाक्य में भरा पाया जाता है।
- प्रेम की तन्मयता की दृष्टि से आलम की गणना 'रसखान' और 'घनानन्द' की कोटि में ही होनी चाहिए।

ठाकुर (बुंदेलखण्डी)

ठाकुर का पूरा नाम 'ठाकुरदास' था। ठाकुर जैतपुर (बुंदेलखण्ड) के निवासी और वहीं के स्थानीय राजा केसरीसिंह के दरबारी कवि थे। ठाकुर प्रकृति से स्वच्छन्द, मनमौजी, निर्भीक, स्पष्टवादी, स्वाभिमानी, सौन्दर्य प्रेमी, भावुक, विरोधियों के प्रति उग्र एवं सहयोगियों के प्रति सहृदय तथा देशकाल की गति को समझने वाले कवि थे। दरबारी होते हुए भी उन्होंने किसी आश्रयदाता की अतिशयोक्ति पूर्ण प्रशंसा कभी नही की।

रचनाएँ

- ठाकुर ठसक और ठाकुर शतक
- ठाकुर कृत ठाकुर उसक में प्रेम के पंथ को वर्ण्य विषय बनाकर उसका स्वच्छन्द वर्णन किया गया है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ठाकुर के सम्बन्ध में लिखा है। ठाकुर बहुत ही सच्ची उमंग के कवि थे। इनमें कृत्रिमता का लेश नहीं है। न तो कहीं व्यर्थ का शब्दाडम्बर है, न कल्पना की झूठी उडान और न अनुभूति के विरूद्ध भावों का उत्कर्ष ।

  ठाकुर प्रधानतः प्रेम निरूपक होने पर भी लोक व्यवहार के अनेकांगदर्शी कवि थे।

बुद्धिसेन या बोधा

उत्तर प्रदेश में बाँदा जिले के राजापुर गाँव में जन्में कवि बोधा का पूरा नाम बुद्धिसेन था। बोधा पन्ना के राजदरबार में काव्य करने जाया करते थे। इन्हें विप्रलम्भ शृंगार रस की कविताओं के लिए जाना जाता है पन्ना नरेश खेत सिंह ने बुद्धिसेन का उपनाम बोधा किया था।

रचनाएँ

- विरह वारीश, इकश्नामा (विरही सुभान दम्पति विलास)
- बोधा कृत 'विरह-वारीश' मूलतः भारतीय प्रेमाख्यान काव्य की परम्परा के अन्तर्गत आता है। इसमें 'माधवानल' और 'कामकन्दला' की प्राचीन लोककथा के साथ परोक्ष रूप से कवि ने स्वयं अपनी जीवन गाथा सुनाने की चेष्टा की है।

बोधा की प्रेयसी 'सुभान' नाम की नर्तकी थी, जिसका स्मरण वे 'विरह वारीश' की कथा के बीच-बीच में करते रहते हैं। बोधा कृत 'विरही सुभान दम्पति विलास' (इश्कनामा) कवित्त, सवैया, दोहा, बरवै आदि अनेक छन्दों में रचित स्फुट रचनाओं का संग्रह हैं।